Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 6, August-2018, ISSN 2230-7540

वैदिक धार्मिक ग्रंथों पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचार

Sunil Kumar*

Lecturer in History, GSSS Fatehpur, Billoch, Ballabhgarh, Haryana

सार - भारत वर्ष की प्राचीनतम सभ्यता हड़प्पा संस्कृति के निवासी एक देवी माता तथा अर्वरणशक्ति के एक श्रृंग युक्त देवता की उपासना किया करते थे। उनके पवित्र, पादप एवं पशु थे और उनके धार्मिक जीवन में प्रत्यक्ष रूप से कर्मकाण्डी अभिषेकों का महत्वपूर्ण स्थान था। सिन्धू घाटी सभ्यता के पश्चात् वैदिक युग में आर्यों ने जब बाह्य जगत् के साथ सम्पर्क किया तो उन्होंने प्रकृति की बाह्य शक्तियों को कार्य करते देखा, जिनसे वे कुछ भयभीत हुए और कुछ प्रभावित भी हुए। इन प्राकृतिक शक्तियों को वैदिक लोगों ने देवता माना और इन देवताओं की पूजा करने लगे। वैदिक लोग सुख-दुखः, आत्मा-परमात्मा, अजर-अमर, इहलोक-परलोक के ज्ञान के इच्छुक थे। इसके लिए और परम सुख की प्राप्ति के लिए विभिन्न देवी-देवताओं की स्तुति प्रारम्भ कर दी वैदिक साहित्य में उल्लेख मिलता है कि आर्यों ने जीवन मरण की गुत्थी सुलझाने के लिए पूनर्जन्म के सिद्धान्त का भी विकास किया। इस तरह आर्यों ने सांसारिक पहेलियों को समझने की चेष्ठा प्रारम्भ कर दी थी।

----------X----------

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के अनुसार, यह कहना कि वेदों का हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में उच्च स्थान है, एक थोथा प्रचार है। उनके अनुसार वेद हिन्दूओं का पवित्र साहित्य है। यह भी एक अपर्याप्त ब्यान है, क्योंकि वेद धर्म ग्रंथ होने के साथ-साथ ऐसे ग्रंथ है जिनकी प्रमाणिकता पर संदेह व्यक्त नहीं किया जा सकता। वेद संशय रहित बताए गए है। जब वैदिक ब्राह्मण कहते हैं कि वेद अपौरूषेय है तो इसका अर्थ है, इनकी रचना मनुष्य ने नहीं की है, इसलिए इसमें त्रुटि, संशय और दोष नहीं हो सकता, इस कारण ये संशय रहित है।[40]

बाबा साहेब के अनुसार जब वैदिक ब्राह्मणों ने वेदों के संशय रहित होने के सिद्धांत को स्थापिता करने का मन बनाया तो उन्होंने वैदिक ग्रंथों को दो वर्गों में विभाजित कर दिया - श्रृति और अश्रुति। प्रथम विभाजन में उन्होंने आठ अंगों में से केवल संहिता और ब्राह्मण को श्रेष्ठ रखा तथा शेष को उन्होंने अश्रुति घोषित कर दिया।[41]

अम्बेडकर के अनुसार, उपनिषदों को वेदों के धार्मिक साहित्य से इस कारण अलग किया कि उपनिषदों में वेदों की इस शिक्षा का विरोध किया गया है कि धार्मिक कार्य और बली ही मोक्ष का एक मात्र साधन है।[42]

वेदों की उत्पत्ति

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार वेदों की उत्पत्ति की खोज वेदों के साथ ही हो गई थी । ऋग्वेद के पुरूष-सुक्त में वेदों की उत्पति का वर्णन है। इसके अनुसार, एक पौराणिक पुरूष के यज्ञ से वेद उत्पन्न हुए, जो ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद कहलाए। सामवेद और यजुर्वेद वेदों की उत्पति के बारे में कुछ नहीं कहते, लेकिन अथर्ववेद में वेदों की उत्पत्ति की व्याख्या है, जो इस प्रकार है - 'काल से ऋक-ऋचाएं प्रस्फुटित हुई और यजुर काल से उपजा।' अथर्ववेद में इस विषय पर दो प्रसंग है। इसमें से प्रथम बहुत विवेकपूर्ण नहीं है, जिसे स्वयं की भाषा में इस प्रकार कहा जा सकता है।

'घोषित करो कि सं्कन्न कौन है, जो आदि ऋषियों, ऋक्, साम, यजुर, पृथ्वी और ऋषियों का पालक है।' अथर्ववेद की दूसरी व्याख्या है कि 'ऋक्, साम और यजुर्वेद इन्द्र प्रदत्त है।'[43] वेदों के पश्चात् ब्राह्मण-ग्रन्थ आए। ब्राह्मण ग्रंथों में से केवल शतपथ ब्राह्मण, तैतरीय ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण, कौषीतकि ब्राह्मण ने वेदों की उत्पति की व्याख्या की है। शतपथ ब्राह्मण

[40] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-8, पृ. 31
[41] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-8, पृ. 63
[42] वही, पृ. 161
[43] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-8, पृ. 25

www.ignited.in

में कई व्याख्याएं है, जो प्रजापति को वेदों का सृष्टा मानता है।[44] उसके अनुसार-

"आरम्भ में एकमेव प्रजापति ही ब्राह्मण थे, उनकी इच्छा हुई मेरी अभिवृद्धि हो, मेरा विस्तार हो। उन्होंने उपासना की, तप किया। जब वे उपासनालीन थे तो तीन तत्वों, पृथ्वी, आकाश और वायु की उत्पति हुई। उन्होंने इनमें उष्मा का संचार किया। उस उष्मा से तीन तेज उत्पन्न हुए, अग्नि जो शुद्ध करती है, वायु और सूर्य । इन तीनों में भी उष्मा का संचार किया। उनके पाप से तीन वेद उत्पन्न हुए। अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद तथा सूर्य से सामवेद।"[45]

शतपथ ब्राह्मण प्रजापति से वेदों की उत्पति की भिन्न व्याख्या करता है। वह कहता है कि प्रजापति ने जल से वेदों की रचना की।[46]

तैतरीय ब्राह्मण कहता है कि वेद प्रजापति की दाढ़ी से उत्पन्न हुए।

उपनिषदों ने भी वेदों की उत्पति की व्याख्या की है। छान्दोग्य उपनिषद् की व्याख्या शतपथ ब्राह्मण के समान है। छांदोग्य उपनिषद् में कहा है कि प्रजापति ने ब्राह्मण को गर्म करके उसमें से चार तत्व निकाले अर्थात् पृथ्वी से अग्नि, हवा से वायू और आकाश से सूर्य निकाले। उस प्रजापति ने फिर तीन आराध्य देवों को गर्म किया, जिसके सार स्वरूप अग्नि के ऋग्वेद की ऋचाएं, वायु से यजुर्वेद के मंत्र और सूर्य से सामवेद की ऋचाएं पैदा हुई।[47]

वृहदाख्यक उपषिद् में वेदों की उत्पति के सम्बन्ध में दो व्याख्या दी है। एक स्थान पर इसमें कहा गया है कि 'आर्द्र काठ से अग्नि उपजी, उससे भिन्न-भिन्न धुए उठे, इसको श्वास प्रक्रिया से ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद बने।[48]

वृहदारण्यक उपनिषद् में अन्य स्थान पर कहा है कि 'प्रजापति द्वारा वाच की रचना की गई और उसके वाच और आत्मा के माध्यम से वेदों सहित समस्त तत्वों का सृजन किया, चाहे वह ऋग्वेद हो, यजुस, साम, छंद, यज्ञ या विभिन्न जीव जन्तु हो। तीन वेद तीन तत्व है - वाच, मानस, और श्वास। वाच ऋग्वेद है, मानस यजुर्वेद और श्वास सामवेद।'[49]

वैदिक ग्रंथों में देवी की पूजा

बाबा साहेब के विचारानुसार वैदिक ग्रंथों में बहुदेववादी धर्म था। अम्बेडकर के अनुसार ऋग्वेद काल में देवताओं की विशाल संख्या थी ऋग्वेद में दो स्थानों पर कहा गया है कि देवताओं की संख्या तीन हजार तीन सौ नौ है, लेकिन यह ज्ञात नहीं है कि किस कारण देवताओं की संख्या घटकर तैंतीस रह गई। इसके बावजूद भी वैदिक देवताओं का देव-कुल सबसे विशाल है । शतपथ ब्राह्मण में तैंतीस देवताओं की व्याख्या इस प्रकार से की गई है - आठ वसु, ग्यारह रूद्र, बारह आदित्य और पृथ्वी तथा स्वर्ग।[50]

भीमराव अम्बेडकर के अनुसार वैदिक साहित्य के अनेक मंत्रों में ऐसा उल्लेख मिलता है, जिनसे यह ज्ञात होता है कि कुछ देवताओं का सर्वोच्च और सर्वशक्तिमान समझा जाने लगा था। ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के प्रथम मंत्र में अग्नि को विश्व-नियंता कहा गया है, लेकिन कुछ समय पश्चात् अग्नि के ऊपर इन्द्र को सर्वोच्च शक्तिशाली देव कहा गया है लेकिन कुछ समय पश्चात् सोम को सर्वोच्च देवता माना जाने लगा। सोम के विषय में कहा गया है कि वह जन्मजात महान् था और वह विश्व का एक छत्र राजा था।

एक मंत्र में सोम के विषय में कहा गया है कि वह इन्द्र, अग्नि, पृथ्वी, सूर्य, स्वर्ग तथा विष्णु का सृष्टा था। लेकिन कुछ समय पश्चात् सोम भी विस्मृत हुआ और सोम के पश्चात् वरूण की उपासना होने लगी। वरूण के विषय में एक मन्त्र में कहा गया है कि 'तू मनुष्य व देवता सभी का स्वामी है।' कालान्तर में विभिन्न देवताओं की तुलना में शतपथ ब्राह्मण के काल में सूर्य एक नया देवता उभरा।

इससे यह स्पष्ट होता है कि 33 वैदिक देवताओं में से इन्द्र, अग्नि, सोम, वरूण व सूर्य प्रधान थे।[51]

अम्बेडकर के विचार के अनुसार वैदिक युग के केवल देवताओं की ही पूजा नहीं करते थे, बल्कि देवियों की भी पूजा की जाती थी। ऋग्वेद में अनेक देवियों का उल्लेख है। जैसे- पृथ्वी, आदिति, दिति, निशितग्री, इन्द्राणी, उषा, प्रिशनी, सूर्या,

[44] सत्यकेतू विद्यालंकार, पूर्व उद्धत, पृ. 45
[45] निरंजन सिंह योग मणीण् पूर्व उद्धत, पृ. 58
[46] डॉ. श्रीकृष्ण ओझा, प्राचीन भारतीय चिन्तन का इतिहास, पृ. 38
[47] रामशरण शर्मा, शुद्रो का प्राचीन इतिहास, पृ. 74
[48] के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास एवं सांस्कृति, पृ. 85
[49] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-8, पृ. 28
[50] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-6, पृ. 90
[51] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-8, पृ. 91

www.ignited.in

अग्नयी, वरूणानी रोद्रसी, सिनिवली, अरामती, अप्सरा और सरस्वती।

पृथ्वी अत्यन्त प्राचीन आर्य देवी थी। अदिति भी कालक्रम की दृष्टि से प्राचीन देवी थी। अदिति वरूण, आर्यमान और मित्र की माता थी। निश्तिग्री इन्द्र की माता थी। अग्नयी वरूणानी, रोद्रासी, इन्द्राणी क्रमशः अग्नि, वरूण, रुद्र व इन्द्र की पत्नियां थी।[52]

अम्बेडकर के अनुसार इस विश्लेषण से दो बातें स्पष्ट होती है। प्रथम यह कि देवता विवाहित थे तथा दूसरी बात यह है कि देवताओं की पत्नियां स्वतः ही पुज्जनीय देवी बन जाती थी, जो देव उपासकों द्वारा पूजी जाने लगी थी।

अम्बेडकर के अनुसार वैदिक आर्यो का धर्म बर्बर और अश्लील था। उस समय नरमेध यज्ञ हुआ करता था । इसका वैदिक साहित्य में सविस्तार से वर्णन मिलता है।[53]

डॉ. अम्बेडकर के विचारानुसार प्राचीन आर्य लींग पूजा करते थे। लिंग पूजा को 'स्कंभ' कहते थे जो आर्य धर्म का अंग थी, जैसा कि अथर्ववेद के मंत्र 107 में है। एक और अश्लीलता थी, जिसने प्राचीन आर्य धर्म को विकृत किया हुआ था।

आर्यों को औरत के साथ खुलेआम लोगों की आंखों के सामने सहवास करने में कोई आपत्ति नहीं थी। ऋषिगण एक धार्मिक अनुष्ठान किया करते थे, जिसे वामदेव्या व्रत कहते थे यह अनुष्ठान यज्ञ भूमि पर किया जाता था। यदि कोई औरत वहा आकर सहवास की इच्छा व्यक्त करती थी और ऋषि से अपनी संतुष्टि के लिए कहती थी तो ऋषि उस समय वही खुले आम यज्ञ-भूमि पर उसके साथ सहवास किया करते थे। इसके कई उदाहरण दिए जा सकते है । ऋषि पराशर को ही लीजिए उन्होंने सत्यवती के साथ इस प्रकार सहवास किया था। इस तथ्य से पता चलता है कि इसे गलत नहीं माना जाता था।[54]

अम्बेडकर के अनुसार वैदिक कालिन धर्म में कर्मकाण्ड का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। इन कर्मकाण्डों में यज्ञ, आहुति, बली आदि प्रथाए उल्लेखनीय थी। डॉ. अम्बेडकर वैदिक काल के कर्म काण्डीय धर्म पर प्रकाश डालते है जो इस प्रकार है -

संस्कार

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार वैदिक काल में धार्मिक जीवन में संस्कारां का अपना विशेष महत्व था । आर्य अपने अनुष्ठानों का संस्कार कहते थे । बाबा साहेब के अनुसार वैदिक आर्यों का ईसाईयों की तरह धर्म संस्कारों में विश्वास था, लेकिन इनमें अन्तर केवल इतना था कि वैदिक काल में बहुत अधिक संस्कार थे। डॉ. अम्बेडकर कहते हैं कि आरम्भ में धार्मिक संस्कारों की संख्या 40 थी लेकिन कुछ समय पश्चात् इन संस्कारों की संख्या घटाकर 20 कर दी गई तथा बाद में इनकी संख्या और घटकर 16 कर दी गई और इस संख्या पर हिन्दूओं के धार्मिक संस्कार स्थिर रहे।[55]

बाबा साहेब के अनुसार इन 16 धार्मिक संस्कारों में से उपनयन संस्कार का सर्वाधिक महत्व था। अम्बेडकर के अनुसार प्रारम्भ में उपनयन संस्कार एक साधारण सा संस्कार होता था। बालक समिधा लेकर आचार्य के पास जाता था और विद्याध्ययन हेतु ब्रह्मचारी बनने की याचना करता था तथा अध्ययन के लिए उसके पास रहने का अनुरोध करता है। समय के साथ-साथ इसका विस्तार होता गया।[56] भीमराव अम्बेडकर के विचारानुसार प्रारम्भ में आर्य अथवा अनार्य सभी उपनयन के पात्र थे। उनके लिए सामाजिक महत्व का कोई स्थान नहीं था। यह सभी के लिए समान संस्कर था। यह केवल मुट्ठी भर लोगों का विशेषाधिकार नहीं था।[57]

अम्बेडकर के अनुसार प्राचीन आर्यों में उपनयन से व्यक्ति को सामाजिक प्रतिष्ठा और वैयक्तिक अधिकार प्राप्त होते थे, लेकिन ब्राह्मणों ने शुद्रों से उपनयन का अधिकार छिन कर उन्हें ज्ञानार्जन और सम्पति सचंय से वंचित कर दिया, क्योंकि सम्पति के स्वामी वही ही हो सकते थे। जो उपनयन के पात्र थे। इसमें शुद्रो का जमाजिक पतन हो गया और वे दरिद्र और अज्ञानी हो गए।

जब शुद्र उपनयन से वंचित कर दिए गए तो यह प्रतिष्ठा का चिन्ह बन गया और इसका वर्जन दासत्व की निशानी बन गया। उपनयन से वंचित करने से शुद्र अपने से ऊपर वाले वर्णो को श्रेष्ठ समझने लगे और उच्च वर्ग शुद्रो को हीन मानने लगे।[58]

[52] राम गोपाल सिंह, डॉ. अम्बेडकर के विचार दर्शन, पृ. 67
[53] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-8, पृ. 109
[54] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-7, पृ. 37
[55] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-6, पृ. 51
[56] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मय, खण्ड-13, पृ. 125
[57] वही, पृ. 137
[58] डॉ. धर्मबीर, डॉ. अम्बेडकर के प्रशासनिक विचार, पृ. 93

अम्बेडकर के अनुसार उपनयन के कारण द्विज और अद्विज शब्द परस्पर विरोधी अर्थ रखते थे। द्विज का अर्थ है दो बार जन्म लेने वाला यह अन्तर उपनयन के अधिकार पर आधारित था। उपनयन संस्कार को दूसरा जन्म माना गया था। जनेऊ या यज्ञोपवीत धारण करने वाले द्विज कहलाते थे और जिन्हें यह अधिकार नहीं था, वे अद्विज कहलाते थे। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को यह अधिकार प्राप्त था, इसलिए ये द्विज थे। शुद्र और अतिशुद्र जनेऊ के अधिकार से वंचित थे। इसलिए यह अद्विज थे।[59]

भीमराव अम्बेडकर के विचारानुसार उपनयन संस्कार केवल ब्राह्मण ही करा सकता था तथा अनाधिकृत उपनयन कराने वाला दण्ड का भागी होता था। अम्बेडकर के अनुसार उपनयन के उपरान्त बालक आचार्य के घर पर ही रह कर वेदाध्ययन करता था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

पाण्डेय, वी.सी.: प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली, 1995

पाठक, विशुद्धानन्द, बील सैमुअल: पांचवीं-सातवीं शताब्दी का भारत बुद्धिस्ट रिकार्ड ऑफ़ द वेस्ट्न वर्ल्ड, दिल्ली, 1995

..... : दी लाइफ ऑफ़ ह्वेनसांग, दिल्ली, 1973

..... : दी ट्रैवल्स ऑफ़ फाह्यान एंड सुग युन, दिल्ली, 1998

मुखर्जी, पी.के. : इंडियन लिट्रेचर इन चाईना एण्ड फार ईस्ट, कलकत्ता, 1931

मार्शल, नागौरी, एस. एल.: प्रिंसीपल्स ऑफ़ इक्नोमिक्स, प्राचीन भारत

मजूमदार, आर.सी.: दी क्लासीकल ऐज, भारतीय विद्या भवन, बम्बई, 1958

लेग्गे, जेम्स: दी ट्रैवल्स ऑफ़ फाह्यान, दिल्ली, 1971

वाटर्स, थामस: ह्वेनसांग ट्रैवल्स इन इंडिया, दिल्ली, 1961

Corresponding Author

Sunil Kumar*

Lecturer in History, GSSS Fatehpur, Billoch, Ballabhgarh, Haryana

[59] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय, खण्ड-13, पृ. 16